EDUCATIONAL PSYCHOLOGY.

B.A. (Hons) Part-III
Paper-VI Group-B
By- Dr. Ramendra Kumar Singh.
Deptt of Psy.
D.K. College, Dumraon (Buxar)
VKSU, Ara

SHORT NOTES ON ESSAY TYPE OF EXAMINATION

शिक्षा जीवनपर्यन्त चलनेवाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा बालकों की बुद्धि, ज्ञान तथा कौशल का वर्द्धन होता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जिससे व्यवहार का परिष्कार एवं परिमार्जन होता है। शिक्षा से प्राप्त ज्ञान एवं कौशल की जाँच परीक्षा के माध्यम से होती है। इसीलिये शिक्षा मनोविज्ञान के अन्तर्गत परीक्षा (examination) को बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

परीक्षा को मोटे तौर पर दो भागों में बाँटा जाता है। एक को Essay type of examination एवं दूसरे को Objective type of Examination कहा जाता है। बालकों/बच्चों की योग्यताओं एवं कौशल की जाँच की पुरानी तथा परम्परागत परीक्षा-पद्धति को निबन्धात्मक परीक्षा कहा जाता है। यह एक ऐसी परीक्षा-पद्धति है जिसमें विद्यार्थियों को एक प्रश्न-पत्र दिया जाता है और इस दिये गये प्रश्न-पत्र में सामान्यतः 10-12 प्रश्नों की एक सूची होती है। इन प्रश्नों में से कुछ प्रश्नों का उत्तर परीक्षार्थी को नियत समय में लिखना होता है। परीक्षार्थी के द्वारा दिये गये उत्तरों की जाँच विशेषज्ञ शिक्षक द्वारा की जाती है। परीक्षा के इस प्रारूप में प्रश्नों का उत्तर descriptive देना होता है। इसमें परीक्षार्थी को अपने विचारों एवं भावनाओं को विस्तृत रूप से व्यक्त करने की छूट होती है। इस तरह परीक्षा के इस

इस प्रारूप में पाँच या छः प्रश्नों का लम्बा उत्तर लिखना पड़ता है।

विशेषताएँ:- इस परीक्षा की अपनी कुछ विशेषताएँ अथवा गुण हैं, जो निम्नलिखित हैं:-

(1) इस परीक्षा प्रणाली में छात्रों को अपने विचारों, भावों एवं संवेगों की अभिव्यक्ति का पर्याप्त सुअवसर मिल जाता है।

(2) इस परीक्षा में बालकों की भाषा, व्याकरण, के ज्ञान में वृद्धि होने का सुअवसर मिलता है।

(3) ~~इस~~ परीक्षा की यह प्रारूप छात्रों की लेखनशैली (सुलेख) भाषण शैली में भी वृद्धि के लिहाज से काफी उपयोगी है।

(4) इसमें छात्रों को उत्तर नियत समय में देना होता है। अतः निश्चित समय में कार्य को पूरा करने की आदत विकसित होती है।

(5) इस परीक्षा द्वारा छात्र-छात्राओं की कल्पनाशक्ति, चिंतनशक्ति एवं स्मरण शक्ति का विकास होता है।

(6) इसकी एक विशेषता यह भी है कि प्रश्नों का चयन एवं रचना करना आसान हो जाता है।

(7) इस परीक्षा प्रणाली में विवादाग्रस्त प्रश्नों का उत्तर देना भी संभव हो जाता है।

(8) इस परीक्षा में प्रश्नों का निर्माण करना आसान है। एक साधारण जानकार व्यक्ति भी प्रश्नों का निर्माण कर सकता है

सीमाएँ अथवा दोष:-

उपर्युक्त विशेषताओं के बावजूद इस परीक्षा प्रणाली की कुछ सीमाएँ हैं:-

(1) इस परीक्षा पद्धति में कदाचार होने की संभावनाएँ अधिक होती हैं। जैसे/गाईड से नकल कर लेते हैं।

(2) इस परीक्षा पद्धति का एक दोष यह भी है कि पक्षपात होने की प्रबल संभावनाएँ होती हैं। परीक्षक अपने चहेते छात्रों को अधिक अंक दे देते हैं।

(3) परीक्षार्थी को तीन चार घंटे बैठकर परीक्षा देनी होती है। अतः

परीक्षार्थियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

(4) इसमें Hit and Miss की गुंजाईश अधिक होती है। जैसे लड़ा तो Hit नहीं लड़ा तो Miss या fail हो जाते हैं।

(5) इस परीक्षा में छात्रों की आत्मविश्वास कमजोर हो जाता है। इसलिए भाग्यवादी बन जाते हैं।

(6) छात्र विषय-वस्तु को बिना समझे रट कर पास हो जाते हैं।

(7) इस परीक्षा प्रणाली में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर प्रश्न निर्माण संभव नहीं। छात्रों को सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का ज्ञान नहीं हो पाता है।

(8) यह एक Subjective exam (व्यक्तिनिष्ठ) है। आत्मगत प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। सुलेख, से मोहित होना, परीक्षक की आत्मगत प्रभाव आदि का प्रभाव पड़ता है।

(9) इस परीक्षा प्रणाली में विश्वसनीयता का अभाव है। एक उत्तर विभिन्न परीक्षकों से जाँच कराने पर उनके द्वारा दिये गये अंकों में अंतर आ जाता है।

निबन्धात्मक परीक्षा में सुधार के उपाय:-

निबन्धात्मक परीक्षा पद्धति की त्रुटियों को सुधारकर उसे वस्तुनिष्ठ एवं विश्वसनीय बनाया जा सकता है। इसके लिये कई तरह के उपायों को अपनाया जा सकता है।

1) प्रश्न रचना में सुधार:- प्रश्न रचना में सुधार लाकर पूरे पाठ्यक्रम को आच्छादित किया जा सकता है। इसके लिए छोटे-छोटे लघुत्तरीय प्रश्नों की रचना की जा सकती है। इस तरह 40-45 प्रश्नों का उत्तर छात्रों से माँगा जा सकता है जो सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से हो। कुछ प्रश्न दीर्घ उत्तरीय (एक या दो) रखा जाए। प्रश्नों की रचना करते समय कुछ कठिन एवं कुछ आसान प्रश्न बनाया जाना चाहिए।

(2) मूल्यांकन में सुधार:- मूल्यांकन में सुधार के लिए परीक्षकों की एक मिटिंग बुलाकर यह निर्णय लेना आवश्यक है कि मापदंडों का

सभी लोग समान ढंग से पालन करें। उत्तरों को सावधानीपूर्वक पढ़कर पक्षपातरहित एवं पूर्वधारणाओं से परे होकर मूल्यांकन के लिये सभी परीक्षकों को रियायत तथा निर्देश दिया जाना चाहिए। प्रत्येक प्रश्न एवं कापी पर पर्याप्त समय देकर पढ़ें तब अंक प्रदान करें। छात्रों को समझकर लिखने के लिए प्रोत्साहित करना तथा उनकी रुचि एवं योग्यता के अनुसार प्रश्न रचना होना चाहिए।

(3) परीक्षा के दूसरे प्रारूपों का सम्मिलित प्रयोग:- निबन्धात्मक परीक्षा की सीमाओं को दूर करने के लिए वस्तुनिष्ठ परीक्षा एवं मौखिक परीक्षा का सम्मिलित रूप से प्रयोग श्रेयस्कर हो सकता है। इसमें निबन्धात्मक परीक्षा की विश्वसनीयता बढ़ जाएगी।

(4) योग्य परीक्षकों का चयन:- मूल्यांकन के लिये निबन्धात्मक परीक्षा में योग्य शिक्षकों का चयन होना आवश्यक है। इसके लिए पहले से अनुभवी एवं काबील शिक्षकों की सूची तैयार होनी चाहिए तब मूल्यांकन में लगाना आवश्यक है। शिक्षक को विषय पर पकड़ होना आवश्यक है।

(5) केन्द्रीकृत मूल्यांकन:- उत्तरपुस्तिकाओं की जाँच Centralised होना चाहिए जहाँ परीक्षक अपना स्टैण्डर्ड तय कर लेते हैं और मिलजुलकर कोई निर्णय लेते हैं। इससे श्रम एवं समय की बचत होती है।

(6) विद्यार्थियों के लिए सुझाव:- छात्र को निर्देशित करना जरूरी हो जाता है कि प्रश्न पढ़कर एवं समझकर लिखें। अनर्गल बातों को लिखने से बचें। विषयान्तर न लिखें आदि-आदि।

इस प्रकार निष्कर्ष के तौर पर कह सकते हैं कि निबन्धात्मक परीक्षा एक परम्परागत परीक्षा प्रणाली है जिसकी कुछ खूबियाँ एवं खामियाँ हैं जिनका वर्णन ऊपर किया गया है। इसमें सुधार लाने के उपाय बताये गए हैं जिसे अपनाकर इस परीक्षा पद्धति को वस्तुनिष्ठ एवं विश्वसनीय बनाया जा सकता है।

[signature]
04.08.2020